ओमशान्ति। पंखे भी फिरते हैं सभी को रिफ्रेश करते हैं। तुम भी स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठते हो तो बहुत रिफ्रेश करते हो। अगर स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठते हो तो। स्वदर्शनचक्रधारी का अ(र्थ) भी कोई समझते नहीं हैं तो उनको समझाना चाहिए। न समझेंगे तो चक्रवर्ती राजा नहीं बनेंगे। स्वदर्शनचक्रधारी को निश्चय होगा हम चक्रवर्ती राजा बनने लिए स्वदर्शनचक्रधारी बने हैं। कृष्ण को भी चक्र दिखाते हैं। अकेले को भी देते हैं। स्वदर्शनचक्र को भी समझना है ज़रूर तब ही चक्रवर्ती राजा बनेंगे। बात तो बहुत सहज है। बाबा स्वदर्शनचक्रधारी बनने में कि(तना) समय लगेगा? बच्चे एक सेकण्ड। फिर तुम बनते हो विष्णु वंशी। देवताओं को विष्णु वंशी ही कहेंगे। विष्णु वंशी बनने लिए पहले तो ज़रूर शिव वंशी बनना है। फिर शिवबाबा बैठ स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं। अक्षर तो (बहुत) सहज है। हम नई विश्व के सूर्यवंशी बनते हैं। सूर्यवंशी है ही नई दुनियां की। हम नई ..... दुनियां के मालिक चक्रवर्ती रजा बनते हैं। स्वदर्शनचक्रधारी विष्णुवंशी बनने में एक सेकण्ड लगता है। बनाने वाला है शिवबाबा। शिव ही विष्णु वंशी बनाते हैं। और कोई बना न सके। यह तो बच्चे जानते हैं विष्णु वंशी होते हैं सतयुग में। यहां नहीं। यह है विष्णुवंशी बनने का युग। तुम यहां आते ही हो विष्णुवंशी में आने लिए। जिसको ही सूर्यवंशी कहते हो। ज्ञान सूर्यवंशी। अक्षर बहुत अच्छा है। विष्णु होता ही है सतयुग का मालिक। उसमें ल.ना. दोनों ही हैं। यहां बच्चे आये हैं ल.ना. अथवा विष्णुवंशी बनने लिए। इसमें खुशी भी बहुत होती है। नई दुनियां नए विश्व में गोल्डेन एज्ड विश्व में विष्णु वंशी बनना है। इनसे ऊँच पद और कोई है नहीं। इसमें तो बहुत ही खुशी होनी चाहिए। प्रदर्शनी में तुम समझाते हो तुम्हारा एमऑबजेक्ट ही यह है। बोलो यह बहुत बड़ी यूनिवर्सिटी है। इसको कहा जाता है रूहानी स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी। एमऑबजेक्ट इस चित्र में है। बच्चों को यह बुद्धि में रखना चाहिए कैसे लिखें जो बच्चों को समझाने में एक सेकण्ड लगे। तुम ही समझा सकते हो। इनमें भी लिखा हुआ है हम विष्णुवंशी देवी–देवता थे ज़रूर अर्थात् देवी–देवता कुल के थे। स्वर्ग के मालिक थे। बाप समझाते हैं मीठे–2 बच्चे भारत में तुम आज से 5000 वर्ष पहले सूर्यवंशी देवी–देवताएं थे। बच्चों को अभी बुद्धि में आया है। शिवबाबा बच्चों को कहते हैं बच्चे सतयुग में तुम सूर्यवंशी थे। बच्चों को अभी बुद्धि में आया है। शिवबाबा आया था सूर्यवंशी घराणा स्थापन करने। बरोबर भारत स्वर्ग था। बाप समझाते हैं हे बच्चों आज से सूर्यवंशी ल.ना. का भारत में राज्य था। यही पूज्य थे। पुजारी कोई भी नहीं थे। पूजा की कोई सामग्री नहीं थी। इन शास्त्रों में ही पूजा आदि की रसम–रिवाज़ रखी हुई है। यह है सामग्री। तो बेहद का शिवबाबा बैठ समझाते हैं। वही ज्ञान का सागर है। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है। उनको वृक्षपति भी कहते हैं। वृक्षपति की दशा ऊँच ते ऊँच होती है। वृक्षपति तुमको समझा, सिखला रहे हैं। तुम पूज्य देवी–देवताएं थे फिर पुजारी बने हो, जब रावण राज्य शुरू हुआ है। देवताएं ही वाममार्ग में विकारी बने हैं। देवताएं निर्विकारी थे। फिर वह कहां गये। ज़रूर पुनर्जन्म लेते–2 विकारी बने हैं। एक–2 अक्षर नोट करना चाहिए। दिल पर या कागज़ पर। यह कौन समझाते हैं? शिवबाबा। वही स्वर्ग़ रचते हैं। शिवबाबा ही स्वर्ग़ का वर्सा देते हैं। और कोई बाप बिगर दे न सके। लौकिक बाप तो है देहधारी। तुम अपने को आत्मा समझ पारलौकिक बाप को याद करते हो। बाबा। बाबा फिर रेसपॉन्ड करते हैं, हे! बच्चों। तो बेहद का हो गया ना। बच्चों तुम सूर्यवंशी देवी–देवता थे फिर तुम पुनर्जन्म ले पुजारी बने हो। यह है ही रावण राज्य। हर वर्ष रावण को जलाते हैं फिर भी मरता ही नहीं। 12 मास फिर रावण को जलावेंगे। गोया सिद्ध कर बतलाते हैं हम सभी रावण सम्प्रदाय के हैं। रावण अर्थात् 5 विकारों का राज्य कायम है। हम रावण के बस हैं। अर्थात् भ्रष्टाचारी हैं। गवर्मेन्ट खुद कहती है यह भ्रष्टाचारी राज्य है सतयुग में भ्र(श्रे)ष्टाचारी राज्य था। अभी कलयुग पुरानी दुनियां भ्रष्टाचारी दुनियां है। यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम प्रजापिता ब्रह्मा वंशी संगमयुग पर बैठे हो। तुम्हारी बुद्धि में है हम ब्राह्मण हैं। अभी शूद्र कुल

के नहीं हैं। कलियुगी मनुष्यों को कहा जाता है शूद्र। शूद्र बुद्धि। इस समय है आसुरी राज्य। गवर्मेन्ट में राजा–रानी ज़रूर चाहिए। नहीं तो कहा जाता है पंचायती राज्य। भल प्राइम मिनिस्ट है उनको भी राय देने वाले बहुत हैं। अभी तो टुकड़े–2 हो गये हैं। हरियाना अलग, पंजाब अलग। पहले एक था प्रज़ीडेन्ट अभी तो अलग–2 हो गये हैं। उनका फिर वज़ीर मिला। चीफ वज़ीर दूसरे अवजीर; क्योंकि उनको राय देने वाला ज़रूर चाहिए कि कहां भूल न हो जाये। जब इन ल.ना. का सूर्यवंशी राज्य था वहां तो इनको किसी प्रकार की राय देने की दरकार ही नहीं। बाप तुमको सूर्यवंशी बना रहे हैं। राय लेते हैं बेबकूफ; क्योंकि उनमें अपना अक़्ल नहीं होता है; इसलिए राय लेते हैं। जैसे उसने कहा कि हमारा गुरु नन्दा है। हम उनकी मत पर चलेंगे। तो गोया अपनी मत नहीं है। तो कहेंगे मूर्ख मत। जबकि उनकी मत पर चलना है तो उनको क्यों नहीं चीफ बनाते; परन्तु तमोप्रधान बुद्धि है ना। तो अक़्ल कुछ नहीं है। बाप को कहते हैं, दुःख हर्ता–सुख कर्ता। अभी सुख कहां है? सतयुग में। दुःख कहां है? कलयुग में। बाप दुःख हर्ता–सुख कर्ता कब आवेगा? ज़रूर कलियुग के अंत, सतयुग आदि के संगम पर आवेगा। दुःख हर्ता–सुखकर्ता है ही शिवबाबा। वह वर्सा देते ही हैं सुख का। सतयुग को सुखधाम कहा जाता है। वहां दुःख का नाम नहीं। तुम्हारी आयु भी बड़ी होती है। रोने की दरकार ही नहीं। समय पर एक पुराना खल छोड़ दूसरी लेते हैं। समझते हैं अभी शरीर बूढ़ा हुआ है। पहले बच्चा सतोगुणी होता है; इसलिए सन्यास(ी) भी बच्चों को ब्रह्मज्ञानी से ऊँच समझते हैं; क्योंकि वह तो फिर भी विकारी गृहस्थियों से जन्म लेते हैं ना। कहेंगे हम फलाने के बच्चे हैं। छोटे बच्चे को तो यह भी पता नहीं रहता। इस समय सारी दुनियां में रावणराज्य, भ्रष्टाचारी राज्य है। श्रेष्ठाचारी देवी–देवताओं का राज्य सतयुग में था। अभी नहीं है। फिर हिस्ट्री रिपीट होगी। श्रेष्ठाचारी कौन बनावे। यहां तो एक भी श्रेष्ठाचारी नहीं। यह है ही भ्रष्टाचारी पतित दुनियां। इसमें बड़ी बुद्धि चाहिए। पत्थर बुद्धि कुछ भी समझ नहीं सकते। जो समझते हैं वह समझ कर पारस बुद्धि बनते हैं। अर्थ है– पत्थर बुद्धियों का अंत। पारस बुद्धि का आदि। यह है ही पारस बुद्धि बनने का समय। बाप आकर 50 वर्ष (में) पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनाते हैं। कहा भी जाता है संग तारे कुसंग बोरे। सत बाप के सिवा(य) (और) बाकी दुनियां में है ही कुसंग। बाप कहते हैं, मैं सम्पूर्ण निर्विकारी बनाकर जाता हूँ। फिर सम्पूर्ण विकारी (कौन) बनाते हैं? कहते हैं, हम क्या जाने। अरे, निर्विकारी कौन बनाते हैं, ज़रूर बाप ही बनावेंगे। विकारी कौन (बनाते) हैं यह किसको पता नहीं है। बाप बैठकर समझाते हैं। मनुष्य तो पत्थर बुद्धि इतने हैं जो कुछ भी नहीं (समझते) हैं। रावण राज्य है ना। कोई का बाप मरता है पूछो कहां गया? कहेंगे, स्वर्ग़वासी हुआ। अच्छा तो इसका (मतलब) नर्क में था ना। तो तुम भी नर्कवासी ठहरे। कितना सहज है समझाने की बात। कोई भी अपन को नर्क(वासी) समझते नहीं हैं। नर्क को वैश्यालय, स्वर्ग़ को शिवालय कहा जाता है। तुम जानते हो सारी दुनियां (के जो) भी मनुष्य मात्र हैं इस समय सभी वैश्यालय में हैं। विकार से पैदा होते हैं। सतयुग को शिवायल कहा जाता है। शिवालय को (कि)तना समय हुआ? आज से 5000 वर्ष पहले इन देवी–देवताओं का राज्य था। तुम विश्व के मालिक महाराजा–महारानी थे। फिर पुनर्जन्म लेना पड़े। पुनर्जन्म सबसे जास्ती तुमने लिया है। उनके लिए ही गायन है। आत्माएं परमात्मा अलग रहे बहुकाल..... तुमको याद है पहले–2 आदि सनातन देवी–देव(ता) धर्म वाले ही आये फिर 84 पुनर्जन्म ले पतित बने हो। अभी फिर पावन बनना है। पुकारते भी हैं पतित–पावन..... तो सर्टीफिकेट देते हैं एक ही पतित–पावन, सुप्रीम सद्गुरू आकर पावन बनाते हैं। खुद कहते हैं, मैं इसमें बैठकर तुमको पावन बनाता हूँ। बाकी 84 लाख योनियां आदि हैं नहीं। यह सभी गपोड़ा मारते हैं। है ही 84 जन्म। सतयुग में इतने..... इन ल.ना. की प्रजा भी थी ना। अभी नहीं है। कहां गये? उनको भी 84 जन्म लेने पड़े। जो पहले नम्बर में आते हैं वही पूरे 84 जन्म लेते हैं। तो पहले–2 उनको जानी चाहिए। देवी–देवताओं की वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट होती है। सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी राज्य मस्ट रिपीट। फिर बाप तुमको ..... बना

रहे हैं। तुम कहते हो हम भाई–2 हैं। इस पाठशाला वा यूनिवर्सिटी में जहां हम नर से नारायण बनते हैं। हमारा एमऑबजेक्ट भी यह है। जो अच्छी रीति पुरुषार्थ करेंगे वह पास होंगे। जो पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो कोई प्रजा में बहुत साहूकार बनते हैं, कोई कम। यह राजधानी बन रही है। तुम जानते हो हम श्रीमत (पर) श्रेष्ठ बन रहे हैं। श्री–2 शिवबाबा की मत पर श्री लक्ष्मी–रानायण वा देवी–देवता बनते हैं। श्री माना श्रेष्ठ। अभी किसको श्री कह नहीं सकते; परन्तु यहां तो जो आवेगा उनको कह देंगे श्री। श्री फलाना..... अभी श्री तो सिवाय देवी–देवताओं के कोई बन नहीं सकता। भारत श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ था। रावण राज्य में भारत की महिमा को खलास कर दी है। भारत की महिमा भी बहुत है तो निन्दा भी बहुत है। भारत बिल्कुल धनवान था अभी बिल्कुल कंगा(ल) बना है। देवताओं के आगे जाकर उन्हों की महिमा गाते हैं। हम निर्गुण हारे में..... आपे ही तरस परोई..... देवताओं को कहते हैं; परन्तु कोई रहम दिल थोड़े ही थे। रहम दिल तो एक बाप को ही कहा जाता जो मनुष्य से देवता बनाते हैं। अभी तुम्हारा वह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। गैरन्टी करते हैं मेरे को याद करने से तुम्हारे जन्म जन्मांतर के पाप भस्म होंगे। और साथ भी ले जाऊँगा। फिर तुमको नई दुनियां में जाना है। यह 5000 वर्ष का चक्र है। नई दुनियां थी सो ज़रूर बनेगी। दुनियां पतित होगी फिर बाप आकर पावन बनावेंगे। बाप कहते हैं, पतित रावण बनाते हैं। पावन मैं बनाता हूँ। बाकी तो यह जैसे गुड्डिडयों की पूजा करते रहते हैं। इनको यह भी पता नहीं रावण को दस शीश कैसे दिखाते हैं। विष्णु को भी 4 भुजा देते हैं; परन्तु ऐसा कोई मनुष्य थोड़े ही होता है। अगर 4 भुजा वाला मनुष्य होता तो उनसे जो भुजा(बच्चा) पैदा होता वह भी ऐसा ही होना चाहिए। यहां तो सभी को दो भुजाएँ हैं। कुछ भी जानते नहीं। भक्ति मार्ग के शास्त्र कंठ कर लेते हैं। इन्हों के भी कितने फॉलोवर्स बन जाते हैं। कमाल है। यह तो बाप ज्ञान की अथॉरिटी हैं। कोई मनुष्य ज्ञान के अथॉरिटी हो न सके। ज्ञान का सागर तुम मुझे ही कहते हो। ऑलमाईटी अथॉरिटी यह बाप की महिमा है। तुम बाप को याद करते हो तो बाप से ताकत लेते हो। तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। तुम समझते हो हमारे में बहुत ताकत थी। हम निर्विकारी थे। सारे विश्व पर अकेले राज्य करते थे। तो ऑलमाइटी कहेंगे ना। यह ल. ना. सारे विश्व के मालिक थे ना। यह माइट इन्हों को कहां से मिली? बाप से। ऊँच ते ऊँच भगवान हैं ना। कितना सहज समझाते हैं यह 84 के चक्र तो बहुत ही सहज है। जि(ससे) तुमको बादशाही मिलती है। पतित को विश्व की बादशाही मिल न सके। पतित तो इनके आगे झु..... समझते हैं हम भक्त हैं। पावन के आगे माथा टेकते हैं; क्योंकि खुद ही पतित हैं तब तो गंगा पर (पैर) धोने जाते हैं। पतित को कब गुरु नहीं किया जाता है। भक्ति मार्ग भी आधा कल्प चलता है। अभी तुमको भगवान मिला है। भगवानुवाच, मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। भक्ति का फल देने आया हूँ। गाते भी हैं भगवान किस न किस रूप में आवेगा। बाप तो कहते हैं, मैं तो कोई बैल , गधे आदि में थोड़े ही आऊँगा। जो ऊँच ते ऊँच था फिर 84 जन्म पूरे किए हैं, उनमें ही आता हूँ। उत्तम पुरुष होते हैं सतयुग में। कलियुग में हैं कनिष्ठ तमोप्रधान। अभी तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो। बाप ही आकर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। यह खेल है। उनको अगर समझेंगे नहीं तो स्वर्ग़ में कब आवेंगे नहीं। सृष्टि चक्र फिरता रहता है। यह कोई भी मनुष्य नहीं जानते। जनावर भी नहीं जानते तो, बाकी मनुष्य क्या काम के ठहरे। वह भी जैसे कि जनावर ही ठहरे; इसलिए उनको बन्दर सम्प्रदाय कहते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे तुम बन्दर थे। बन्दर की सेना है ना रावण पर जीत पाने लिए। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।